International Journal of Research
Available at https://edupediapublications.org/journals
p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 10
October 2015

भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

निशांत सैनी

रिसर्च स्कॉलर
राजनीतिक विज्ञान विभाग
म.द.वि., रोहतक

शोध आलेख सारः भारत का पूर्व एशिया के साथ व्यापार और संस्कृति आदान–प्रदान का एक लंबा इतिहास है, जो एक लम्बे कार्यकाल से शुरू हो गया था। सांस्कृतिक बंधन अशोक महान की अवधि के दौरान बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ शुरू हुआ था।

1990 की शुरूआत में प्रधानमंत्री नरसिंहाराव ने भारतीय अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण के एक भाग के रूप में एशिया से जोड़ने के लिए 'लुक ईस्ट नीति' का समर्थन किया। 25 वर्श बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत की अर्थव्यवस्था को नई ऊर्जा प्रदान करने के लिए परम्परा के साथ सक्रियता का नया उद्देश्य समाहित करते हुए पुनः पूरब का रूख किया।

मुख्य शब्दः एक्ट ईस्ट पॉलिसी, आसियान, वियतनाम, ओ.एन.जी.सी.।

ईस्ट पॉलिसी को 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' में बदलनाः अब समय आ गया है कि भारत ''लुक ईस्ट पॉलिसी'' की जगह ''एक्ट ईस्ट पॉलिसी'' को अपनाए, क्योंकि अब समय सिर्फ देखने का नहीं बल्कि करने का है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि नये युग के साथ आगे बढाने के लिए 'लुक ईस्ट को नहीं' 'एक्ट ईस्ट' नीति को बढ़ाने की जरूरत है। इसलिए उसे अब 'एक्ट मोड़' में आने की जरूरत है।

भारत को पूँजी, प्रौद्योगिकी संसाधन, ऊर्जा, बाजार और कौशल तक पहुँच, एक सुरक्षित वातावरण, पड़ोसी का शांतिपूर्ण व्यवहार तथा एक स्थिर वैश्विक व्यापार प्रणाली की आवश्यकता है।

भारतीय जीवन और सांस्कृतिक प्रभाव अभी भी दक्षिण पूर्व एशियाई, वास्तुकला, भोजन, संस्कृति, भाशा और धर्म में दिखाई देता है। 'लुक ईस्ट पॉलिसी' के माध्यम से

भारत ने एक बार फिर पूर्वी एशिया को भारत के चाणक्य के रूप में जाने वाले पी.वी. नरसिंह राव के रूप में खोज निकाला।

अटल बिहारी वाजपेयी ने आसियान देशों के साथ भारत के सम्बन्ध में सुधार के लिए एक कदम और आगे बढ़ गए। जब उन्होंने खुला आकाश नीति (सुल्तान 2003) की पेशकश की।

दक्षिणी–पूर्वी एशियाई देशों के संगठन–आसियान, इंडोनेशिया, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड, म्यांमार और वियतनाम शामिल हैं। भारत– आसियान के साथ मजबूत और बहु आयामी सम्बन्धों पर केन्द्रित है।

1990 के दशक के बाद बदलती परिस्थितियां:

इस दशक में दुनिया के राजनैतिक और आर्थिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन और आर्थिक उदारीकरण की दिशा में भारत के अपने संघर्श का नतीजा है, जो आज तक एक गतिशील और कार्योन्नमुख एक्ट ईस्ट पॉलिसी में तबदील हो गई है।

लुक ईस्ट नीति 1991 में अपने आर्थिक उद्घाटन के बाद से भारत के अन्तर्राश्ट्रीय रिश्ते के प्रमुख हिस्सा का एक प्रतिबिम्ब है। नीति पूरे एशिया–प्रशान्त क्षेत्र में व्यापक सुरक्षा और रक्षा सम्बन्धों को दक्षिण–पूर्व एशिया के साथ आर्थिक और कूटनीतिक रिश्ते विकसित किये गए हैं।

भारत के जापान–वियतनाम तथा अस्ट्रेलिया के साथ सम्बन्ध– एक्ट ईस्ट पॉलिसी में सहायक:

हॉल के वर्शों में भारत ने जापान, वियतनाम और अस्ट्रेलिया के साथ सम्बन्ध मजबूत बनाने के दौरान इस क्षेत्र में अधिक से अधिक सामरिक भूमिका निभाने के लिए अपनी इच्छा व्यक्त की है। भारत की लुक ईस्ट नीति नवम्बर 2014 में म्यांमार में आयोजित आसियान शिखर सम्मेलन में एक्ट ईस्ट पॉलिसी के घोशणा पत्र के साथ इसने और गति पकड़ ली। इसने भारत की ओर ज्यादा प्रमुख सामरिक भूमिका निभाने की इच्छा को और जिन्दा कर दिया– साथ ही पूर्वी और दक्षिणी पूर्वी एशिया में रक्षा कूटनीति के जरिये इसे समर्थन भी मिला।

भारत और जापानः

भारत और जापान दोनों देश अपने सम्बन्धों की सराहना करते हैं। इण्डो–जापानी साझेदारी 2013–14 में 16 बिलियन डॉलर द्विपक्षीय व्यापार के महत्वपूर्ण दौर में हैं।

पूर्वी चीन सागर में और साथ में लद्दाख सीमा में चीन की मुखरता ने भारत–जापान सम्बन्धों के लिए एक अतिरिक्त प्रोत्साहन का काम किया है। एशिया की तेजी से बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य में एक–दूसरे के महत्व की आपसी मान्यता ने जापान के साथ सम्बन्धों को प्राथमिकता देने के लिए भारत को प्रेरित किया है।

भारत और वियतनामः

वियतनाम के साथ भारत के रिश्ते रणनीतिक रूप से सबसे महत्वपूर्ण हैं। वियतनाम का चीन के साथ तनावपूर्ण रिश्तों में बढत तथा इण्डो–चीन और दक्षिणी चीन सागर में इसकी प्रमुख भू–राजनीतिक स्थिति वियतनाम को एक प्राकृतिक सहयोगी बना देता है। राजनीतिक, रक्षा, सुरक्षा रिश्तों के उन्नयन के साथ आर्थिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक सहयोग के क्षेत्र में भी करीबी रिश्ता बनाने की कड़ी में वियतनाम का महत्वपूर्ण योगदान है।

भारत और आस्ट्रेलियाः

आस्ट्रेलिया भारत के **'एक्ट ईस्ट नीति'** में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी है। आस्ट्रेलिया और भारत दोनों में नए नेताओं के साथ, दो हिन्द महासागर के लोकतंत्रों के बीच सम्बन्धों का निर्माण करने के लिए नये सिरे से सभावना जगी है।

प्रमुखतयाः कहा जा सकता है कि भारत को राजनीतिक स्तर पर पूरे क्षेत्र में पूर्व और दक्षिण, पूर्व एशियाई सहयोगियों के साथ अधिक से अधिक रिश्ता और अधिक से अधिक राजनयिक संसाधनों की आवश्यकता होगी।

निश्कर्शः

पद्भार ग्रहण करने के बाद से अपने प्रारंभिक महीनों में मोदी सरकार ने एशिया–प्रशांत के साथ गंभीर रिश्ते को आगे बढाने और चीन, आसियान, वियतनाम,

p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 10
October 2015

आस्ट्रेलिया के साथ उच्च स्तरीय बातचीत को प्राथमिकता देने का अपना इरादा जाहिर किया है। भारत एशिया–प्रशांत क्षेत्र में गंभीर रणीनति को आगे बढाने और हिन्द महासागर क्षेत्र में शक्ति सन्तुलन बनाए रखने के लिए आकर्शक सुरक्षा भागीदार के रूप में कार्य करने के अवसर की तलाश में हैं। ''एक्ट ईस्ट पॉलिसी'' एक कदम आगे बढकर स्थिरता बनाए रखने के लिए तत्पर हैं और इस तरह इस क्षेत्र में शान्ति और समृद्धि की गारन्टी है।

सन्दर्भ सूचीः

- बी.एल. फाड़िया, अन्तर्राश्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, जयपुर।
- पुश्पेश पंत, अन्तर्राश्ट्रीय सम्बन्ध, लेक्सीस नेक्सीस पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- रहीस सिंह, वैश्विक सम्बन्ध, पियर्सन पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- आर. सी. बरमानी, अन्तराश्ट्रीय सम्बन्ध, गीताजंली पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- दैनिक जागरण, राश्ट्रीय संस्करण, दिल्ली